उसको हँसने दो

हँसने का सौभाग्य सिर्फ मनुष्य केलिए है। खुश के वक्त में हम बहुत हँसते है। लेकिन क्या ज़िन्दगी में सिर्फ खुशी ही है? नहीं ना। ज़िन्दगी में सुख-दुःख को तुल्य प्रादान्य है।

मीना की घर में आज सब खुश है। पता है क्यों? आज उसकी बहन सीता की शादी है। सब लोग खुशी से नाचते है, कुछ लोग खाते थे, कुछ लोग गाते थे, और कुछ लोग काम करते थे। लेकिन शादी सब पूरा होने की बाद, सब लोग के मुँह से खुशी चली गया। मीना सोचा कि ये अचानक क्या होगया। उसने उसकी माँ के पास चला और पूछा, "माँ, अचानक सबको क्या होगया? क्यूँ सब दुःख है।" ये सुनकर माँ ने मीना को गले लगया और फिर रोना शुरु किया।

ये सब देखकर मीना को कुछ नहीं समझ आया। उसने सोचा कि आज क्यूँ माँ रोती है। माँ की एक बड़ा सपना था दीदी की शादी, इसलिए आज उन्हें खुश होना चहिए।

मीना ने माँ से एक बार भी पूछा, "माँ आप क्यूँ रो रही है? बता दे ना।" माँ रोना बस किया और कहा, "आज तेरी बहन अपनी घर जा रही है बेटी।" मीना को कुछ समझ नहीं आया, उसने पूछा, "यही घर तो उसकी असली घर है ना माँ।" माँ ने कहा, "नहीं बेटी ससुराल है एक लड़की केलिए अपना घर।" मीना को आश्चर्य हुआ। उसने कहा, मतलब दीदी आज के बाद मेरे साथ नहीं खेलूँगा? नहीं सो जाऊँगा, नहीं खाऊँगा, और नहीं बहुत हसूँगा?" माँ ने जवाब दिया, "हाँ बेटी।"

मीना को ये अविश्वसनीय था। कैसे दीदी अपनी घर छोड़के चली जाऊँगा? कैसे माँ के जैसे वहाँ के सारे काम करूँगा। वो तो बहुत आलसी

लड़की था। कुछ समय तक मीना ऐसे सोचकर रखा। इसके बाद उसने पूछा, "लेकिन माँ पिछले साल भैया के शादी था। लेकिन वे अब भी यहाँ ही हैं।" माँ ने कहा, "ये सिर्फ लड़कियों की बात है मीना।"

ये सब सुनकर मीना की मन दुःख से भरा गया। मीना की बहन सीता चली गया। सब उस समय सोया। मीना भी। लेकिन अब कोई नहीं सो रहे थे। फिर मीना अभी भी दुःखी थी। उसने रात भर सोने बिना सोचा कि क्यों लड़कियों की ज़िन्दगी ऐसी है।

कल दिन उसने पहले उठ गया और माँ के पास जाकर पूछा, "माँ, क्या मेरी इस हँसी शादी के बाद कथम होगा?" माँ को ये सुनकर आश्चर्य हुआ, "क्यों तू अचानक ऐसे बात करती हूँ? क्या हुआ बेटी।" उसने मुसकराया और कहा, "कल हम दीदी की ससुराल जा रही है ना, इसके बाद मैं कहूँगा।"

अगला दिन सबने सीता की घर गया। सीता वहाँ खुश था। वे एक अच्छी पत्नी थी, एक अच्छी बहु थी, और एक अच्छी भाभी भी थी।

घर लौट आने के बाद माँ ने मीना को बुलाया और उससे पूछा, "अब बताओ, कल तुमने क्यों मुझसे ऐसे बात पूछा, सीता तो वहाँ खुश है।" मीना ने मुसकुराया और कहा, "सच है माँ, दीदी एक अच्छी पत्नी है, बहु है और भाभी भी है। लेकिन उसकी सपना सिर्फ ये बनने केलिए नहीं था। उसकी इच्छा एक काम था। उसको ~~भी~~ पढाई करना चाहता था। लेकिन शादी के बाद उस सपना पानी में मर गया।"

ये सुनकर माँ ने कहा, "लेकिन शादी के बाद पढने की इच्छा उसकेलिए है तो वो ज़रूर मुझसे कहेगा।" मीना ने कहा, "माँ शादी की बाद पढाई करना किसी लड़की से नहीं होगा, पता है क्यों? क्योंकि उसकी ज़िन्दगी का हक उसके पास नहीं है। वो हक उसके पहले उसके माँ-बाप के पास है,

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

फिर उस हक उसकी पती है पास है, और फिर उस हक उसकी बच्चे के पास है। एक लड़की की जिन्दगी ऐसी ही है।" माँ ने उसको पूछा, "तुम्हारी मतलब क्या है।" मीना ने कहा, "एक लड़की को पता है कि उसकी हँसी किस बात में है। लेकिन वो ज़िन्दगी में हँसते ही नहीं, क्योंकि इस समूह लड़के - लड़की को बराबर करते हैं।" इतना कहकर मीना उसके कमरे में गया।

इस समय माँ रसोई में एक शिला जैसे रहते थे। उस रात में वे सोया नहीं पाया। अगली सुबह उन्होंने सीता को फोन से बात किया। तब उसको पता गया कि मीना की बातें सच थे।

ये सब मन में रहने के कारण माँ ठीक नहीं था। इसलिए उसने ये बात बुआ को कहलिया। ये सुनकर बुआ ने कहा, "सच है, लेकिन क्या करूँगा लड़कियों की जीवन ऐसी ही है।"

उनकी ये बातें सुनकर मीना आया। उसने पूछा, "बुआ, लड़कियों की जीवन कौन ऐसे बनाता है।" बुआ बोली, "समूह तो ऐसा ही है बेटी।" समूह को बदलना हमसे नहीं होगा।" ये सुनकर मीना ने कहा, "समूह को बदलना हमसे नहीं होगा, लेकिन हमें बदल सकता है। एक लड़की की हँसी का मूल्य उसकी शादी से बेहतर है।"

अपनी उत्तरदायित्व पूर्ति करने केलिए सब लोग अपनी बेटियों की शादी जल्दी में करती है। लेकिन इसके अधिक प्रधान्य उसकी हँस केलिए है। ये बात समझ लो और उसको हँसने दो!